जून: 2022 वर्ष : 5 अंक : 9

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर

निदेशक की कलम से

संस्थान का मासिक समाचार, जून 2022 आपके समक्ष प्रस्तुत है।

वर्तमान में कोरोना महामारी जैसी आपदा लगभग नियंत्रण में है, सिवाय कुछ छिटपुट मामलों को छोड़कर। वैसे देखा जाय तो कोरोना महामारी के बाद लोगों में अपने स्वास्थ्य को लेकर चेतना और भी बढ़ गई है। जिसका उदाहरण हैं- 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस में लोगों की बढ़ती हुई सहभागिता। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस ग्रीष्म संक्रांति अर्थात 21 जून को मनाई जाती है। दिनांक 21 जून को हमारे संस्थान और क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्रों में भी योगासत्र का आयोजन किया जाता है।

योग सूक्ष्म विज्ञान पर आधारित एक आध्यात्मिक अनुशासन है, जो मन और शरीर के बीच सामंजस्य लाने का कार्य करता है। यह स्वस्थ जीवन जीने की कला और विज्ञान है। 'योग' शब्द संस्कृत मूल शब्द 'युज' से बना है, जिसका अर्थ है 'जुड़ना' या 'एकजुट होना'। योग का अभ्यास व्यक्तिगत चेतना के साथ सार्वभौमिक चेतना की ओर ले जाता है, जो मन और शरीर तथा मानव और प्रकृति के बीच एक पूर्ण सामंजस्य स्थापित करता है। आइए, हम सब अपने दैनिक जीवन में योग को अपनाकर एक स्वस्थ जीवन की ओर अग्रसर हों।

इस माह मणिपुर के माननीय मुख्यमंत्री श्री एन. बीरेन सिंह की उपस्थिति में लोकतक झील में इस राज्य की प्रचलित मछली, ओस्टियोब्रामा बेलंगेरी की रैन्चिंग की गयी, इसके साथ साथ अयोध्या शहर के पावन सरयू नदी, बैरकपुर के गांधी घाट पर एवं अन्य स्थानों पर भी इंडियन मेजर कार्प की रैन्चिंग की गयी ।

धन्यवाद,

(बसन्त कुमार दास)

मणिपुर के लोकतक झील में सिफरी द्वारा मणिपुर की राजकीय मछली, पेंगबा का मेगा रैंचिंग कार्यक्रम

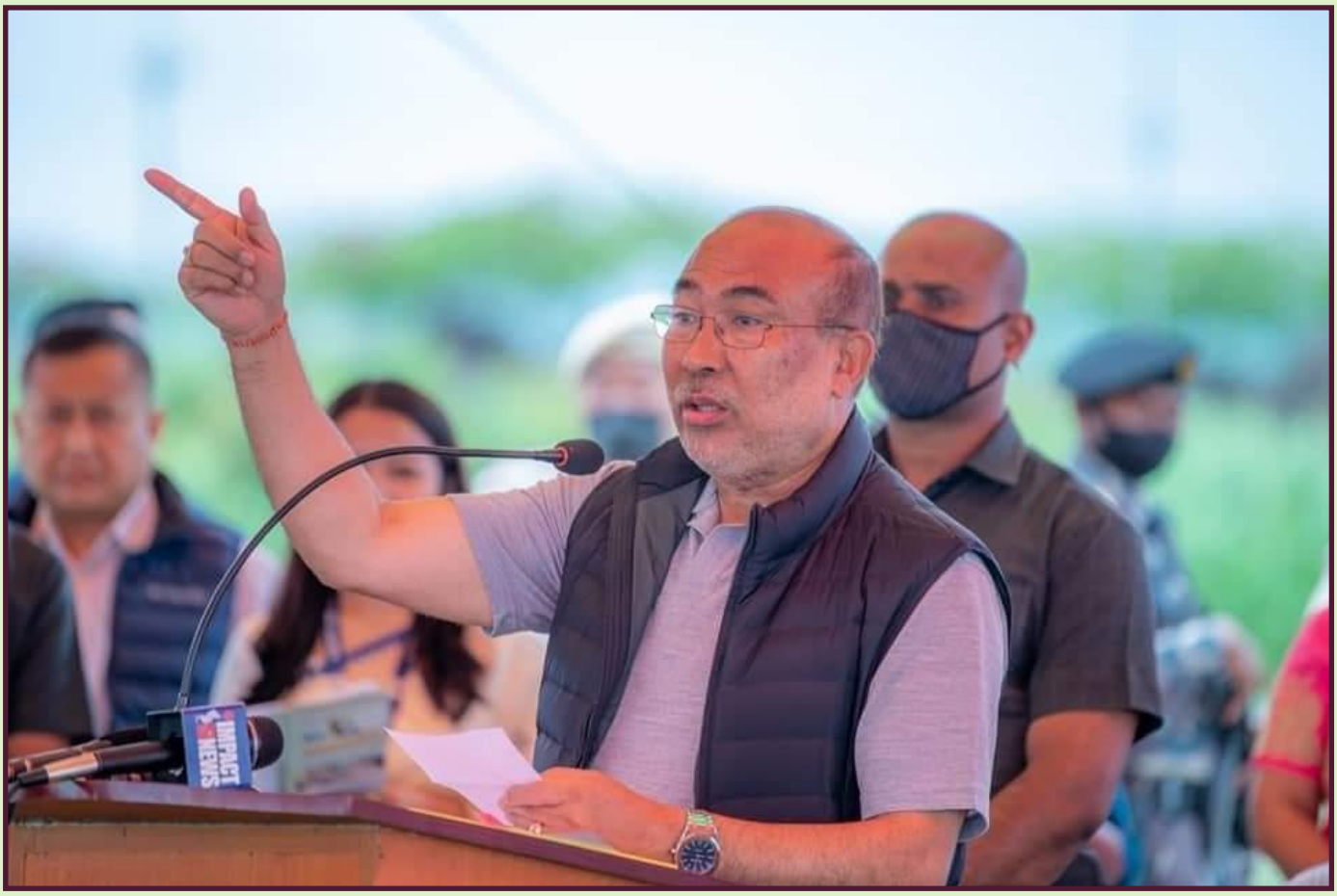

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी), बैरकपुर ने मात्स्यिकी विभाग, मणिपुर तथा लोकतक विकास प्राधिकरण (एलडीए) के साथ दिनांक 11 मई 2022 को मणिपुर के बिष्णुपुर जिले में स्थित लोकतक झील में इस राज्य की प्रचलित मछली, *ओस्टियोब्रामा बेलंगेरी* (जिसे स्थानीय तौर पर पेंगबा के नाम से जाना जाता है) के लिए एक मेगा रैंचिंग कार्यक्रम का आयोजन किया।

मणिपुर के माननीय मुख्यमंत्री श्री एन. बीरेन सिंह ने 11 मई, 2022 को मणिपुर की सबसे बड़ी अलवरण जल की झील, लोकतक झील (रामसर स्थल) में मणिपुर राज्य की प्रसिद्ध मछली पेंगबा के मेगा रैन्चिंग कार्यक्रम का उद्घाटन किया और इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इस कार्यक्रम में उनके साथ अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे, जैसे - श्री एच. डिंगो सिंह, माननीय मंत्री (मत्स्य पालन); श्री एम.असनीकुमार सिंह, माननीय अध्यक्ष, लोकतक विकास प्राधिकरण; श्री टी. रोबिन्द्रो, माननीय विधायक, थंगा ए/सी; श्री के. रोबिन्द्रो, माननीय विधायक, मायांग इम्फाल ए/सी; श्री एल. रामेश्वर सिंह, माननीय विधायक, केइराव ए/सी; श्री टी. शांति सिंह, माननीय विधायक, मोइरंग ए/सी, सिफ़री के निदेशक डॉ. बि. के. दास, और श्री एच. बालकृष्ण सिंह, मणिपुर मत्स्य पालन निदेशालय के निदेशक।

माननीय मुख्यमंत्री श्री एन. बीरेन सिंह ने संस्थान की इस पहल की सराहना की। उन्होंने राज्य के नागरिकों से

बिजली के माध्यम से मछली पकड़ने, छोटे जालीदार जाल से मछली पकड़ने से मना किया, और लोकतक झील को बचाने की अपील की और उपस्थित दर्शकों के सामने घोषणा की कि मणिपुर सरकार पेंगबा के संरक्षण और लोकतक मछुआरों की आजीविका बढ़ाने के लिए लोकतक झील में एक करोड़ मछली के बीज छोड़ेगा। माननीय मुख्यमंत्री ने लोकतक झील में पाए जाने वाले मछलियों की सूची वाला एक पोस्टर, मणिपुरी भाषा में 'लोकतक झील में स्थायी रूप से पेंगबा का पालन', 'खुले जल निकायों के प्रबंधन' पर जानकारी वाले तीन पत्रक का विमोचन किया। माननीय मुख्यमंत्री ने आईसीएआर-सिफ़री द्वारा प्रदान किए गए इनपुट के रूप में 10 टन सिफ़री केजग्रो फ्लोटिंग फीड, 10 केज नेट, 10 सिफ़री एचडीपीई पेन को 4 सहकारी समितियों के 150 लाभार्थियों के बीच वितरित किए।

श्री एच. डिंगो सिंह, मणिपुर के माननीय मत्स्य पालन मंत्री ने मछुआरों से झील के सतत उपयोग के लिए जिम्मेदार होने का आग्रह किया और राज्य के मत्स्य विकास के लिए विकासात्मक गतिविधियों को शुरू करने का वादा किया। श्री असनीकुमार ने लोकतक झील की पारिस्थितिकी के संरक्षण में एलडीए की भूमिका पर अपनी बात रखी। इससे पहले अपने स्वागत भाषण में सिफ़री के निदेशक डॉ. बि.के. दास ने झील में पेंगबा पालन के महत्व पर चर्चा की। उन्होंने दर्शकों को राज्य में सिफ़री के हस्तक्षेप के बारे में जानकारी दी। संस्थान ने राज्य की महत्वपूर्ण नदियों और आर्द्रभूमि के मत्स्य पालन और पारिस्थितिकी पर अध्ययन किया। हाल के अध्ययनों में, लोकतक झील से 35 मछली प्रजातियों की सूचना मिली जो 2004 में प्राप्त 54 प्रजातियों से कम थी। सिफ़री ने 2012 से तकमू पाट में पेन कल्चर प्रदर्शन किया और इस तकनीक को अपनाने से मछुआरों की आय में 47% की वृद्धि हुई। 2020-21 के दौरान तकमू पाट में सिफ़री द्वारा पहली बार पेंगबा की केज कल्चर का भी प्रदर्शन किया गया।

यह कार्यक्रम मत्स्य पालन विभाग, मणिपुर और लोकतक विकास प्राधिकरण (एलडीए) के सहयोग से आयोजित किया गया था। इस अवसर पर मणिपुर के बिष्णुपुर जिले के दो स्थलों सेंद्रा और करंग द्वीप से लोकतक झील में एक लाख पेंगबा छोड़े गए। पेंगबा उत्तर पूर्व भारत के मणिपुर, म्यांमार और चीन के युनान प्रांतों में प्राप्त होने वाली एक निकट संकटग्रस्त मध्यम कार्प है।

राज्य में इसके महत्व और उच्च उपभोक्ता वरीयता के कारण इसे मणिपुर की 'राज्य मछली' के रूप में नामित किया गया है। अतीत में लोकटक झील में यह बड़ी मात्रा से उपलब्ध थी, जो राज्य में लगभग 40% प्राकृतिक मत्स्य पालन में योगदान देता है। हालांकि, पिछले कुछ दशकों में इसकी आबादी में काफी गिरावट आई है और आईयूसीएन रेड लिस्ट के अनुसार इसे 'खुले जल में विलुप्त' घोषित किया गया है। 90 के दशक में मछली के प्रेरित प्रजनन की सफलता और बाद में झील में विभिन्न संगठनों द्वारा किए गए मछली पालन कार्य के फल स्वरूप पेंगबा झील में दिखाई देने लगी। पेंगबा के घटते स्टॉक को फिर से पुनः जीवित करने के उद्देश्य से, आईसीएआर-सिफ़री ने 15 से 16 मार्च, 2022 के दौरान लोकटक झील में " ऑस्टियोब्रामा बेलंगेरी (पेंगबा) के प्राकृतिक स्टॉक की वृद्धि" के लिए एक मेगा रैंचिंग कार्यक्रम शुरू किया, जहां 30,000 पेंगबा अंगुलिमीनों को छोड़ा गया।

यह कार्यक्रम आईसीएआर-सिफ़री के प्रमुख रैन्चिंग कार्यक्रम को बरकरार रखने के लिए, संस्थान के वैज्ञानिकों (क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी के प्रभारी अध्यक्ष डॉ. बी. के. भट्टाचार्य, ; डॉ सोना येंगकोकपम, वरिष्ठ वैज्ञानिक; सुश्री टी निरुपदा चानू, वैज्ञानिक) द्वारा समन्वित किया गया था। इसमें मणिपुर के मत्स्य पालन विभाग के कर्मचारियों, एलडीए के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया; आईसीएआर, एनईएच आरसी इंफाल केंद्र; केवीके इंफाल (पश्चिम); मत्स्य विभाग के छात्र; मत्स्य उद्यमी; अन्य हितधारक और लगभग 150 मछुआरें भी उपस्थित थे। मणिपुर मत्स्य विभाग निदेशालय के निदेशक श्री बालकृष्ण सिंह ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

अनुसूचित जनजाति उपयोजना के तहत, मत्स्य निदेशालय, छत्तीसगढ़ के सहयोग से छत्तीसगढ़ के पेन में मछली पालन प्रदर्शन- सह- जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

छत्तीसगढ़ राज्य मध्य भारत का एक सघन वनाच्छादित राज्य है। इस राज्य में कुल 42 अनुसूचित जनजातियां हैं। 2011 की जनगणना के अनुसार, छत्तीसगढ़ में भारत की जनजातीय आबादी का लगभग 7.5 प्रतिशत लोग आते हैं और राज्य की कुल जनसंख्या का लगभग 30 प्रतिशत लोग जनजाति समुदाय से हैं। सिफ़री ने मत्स्य निदेशालय, छत्तीसगढ़ के सहयोग से इस राज्य के जनजातियों की सामाजिक-आर्थिक उत्थान के लिए पहल किया है।

इस राज्य के अन्तर्स्थलीय खुले जल संसाधनों में जलाशय और बांध प्रमुख हैं। सिफ़री के निदेशक डॉ. बि.के. दास के नेतृत्व में राज्य के चयनित छोटे जलाशयों में प्राथमिक मछुआरा सहकारी समितियों (पीएफसीएस) की सहायता से मछली उत्पादन वृद्धि कार्यक्रम शुरू किया गया है। इस क्रम में संस्थान ने छत्तीसगढ़ के दस चयनित छोटे जलाशयों (तोरेंगा, बहेरा खार, सुतिया पथ, मतियामोती बांध, कोसेर्टेडा, राबो, घुंघुट्टा, गेज, केशवनाला) में मछली उत्पादन वृद्धि के लिए 20 पेन, 10 इंजन वाली नाव, 20 कोराकल और 20 टन सिफ़री केज ग्रो फीड दिया है।

सिफ़री ने इन जलाशयों में कम लागत में अधिक उत्पादन वृद्धि के उद्देश्य से दिनांक 13 मई, 2022 को मत्स्य विभाग, छत्तीसगढ़ के सहयोग से तोरेंगा जलाशय के पेन में मछली पालन का प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के दास और मत्स्य पालन विभाग, छत्तीसगढ़ के निदेशक, श्री एन.एस. नाग ने जलाशय में स्थापित पेन में मत्स्य बीजों को छोड़ा। इसके बाद एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया। डॉ. दास ने सभा को संबोधित करते हुए जलाशयों में मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए पेन पालन तथा आजीविका और पोषण सुरक्षा के लिए मछली पालन के महत्व पर प्रकाश डाला। छत्तीसगढ़ मत्स्य पालन विभाग के निदेशक, श्री एन.एस. नाग ने आदिवासी मछुआरों को संबोधित करते हुए कहा कि पेन पालन के माध्यम से जलाशय में मछली के बीज को बढ़ाया जा सकता हैं, जो न केवल जलाशय के उत्पादन में सुधार करेगा बल्कि उत्पादन की लागत को भी कम करेगा और साथ ही मछुआरों की आजीविका में सुधार होगा। इस कार्यक्रम में कुल 56 आदिवासी उपस्थित हुए ।

सिफ़री ने मणिपुर के मैपिथेल जलाशय में जागरूकता कार्यक्रम के साथ पिंजरों में मछली बीज संचयन किया

सिफ़री, बैरकपुर ने पूर्वोत्तर क्षेत्र परियोजना के तहत दिनांक 12.05.2022 को मणिपुर के मैपिथेल जलाशय, कामजोंग जिला में मत्स्य पालन विभाग, मणिपुर के सहयोग से "मैपिथेल जलाशय में स्थायी मत्स्य पालन हेतु मत्स्ययन" पर एक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। मैपिथेल एक मध्यम जलाशय है जिसका क्षेत्रफल 1,182 हेक्टेयर है। जागरूकता कार्यक्रम का उद्देश्य तंगखुल नागा जनजाति के स्थानीय अनुसूचित जनजाति मछुआरों को जिम्मेदारी से मत्स्ययन, स्वदेशी मछली प्रजातियों के महत्व और उस क्षेत्र के विस्थापित धान कृषकों के लिए अतिरिक्त आजीविका विकल्प के रूप में घेरे में जलकृषि की आवश्यकता के बारे में जागरूक करना था। इस जलाशय के आसपास स्थित 6 गांवों में लगभग 7000 ग्रामीण रहते हैं।

इस कार्यक्रम में सिफ़री के निदेशक, डॉ बि के दास और क्षेत्रीय केंद्र के प्रमुख, डॉ बी के भट्टाचार्य के कुशल मार्गदर्शन में आयोजित किया गया और डॉ सोना येंगकोकपम, वरिष्ठ वैज्ञानिक और सुश्री निरुपदा चानू, वैज्ञानिक द्वारा समन्वयन किया गया। संस्थान ने स्थानीय समुदाय को 10 नेट केज और 2 टन सिफ़री केजग्रो फ्लोटिंग फीड वितरित किया। श्री रोकसन कासुङ्ग, सचिव, स्थानीय मछुआरा समूह ने संस्थान के इस पहल

के लिए आभार प्रकट किया। साथ ही, उन्होने बताया कि कैसे स्थानीय जनजाति समुदाय ने मैपिथेल बांध के चालू होने के बाद धीरे-धीरे धान कृषकों ने मछली पकड़ने को अपनी आजीविका के स्रोत के रूप में अपना लिया है। उन्होंने आजीवका हेतु जलाशय के पिंजरे में मछली पालन शुरू कर दिया है, लेकिन इस पालन पर तकनीकी जानकारी की कमी के कारण इसे लाभदायक नहीं बना सके। उन्होंने सिफ़री से आग्रह किया कि वे मछुआरों को घेरे में मछली पालन पर उन्हें प्रशिक्षित करें। डॉ. बी के भट्टाचार्य ने जलाशय में स्वदेशी मछली जैव विविधता के संरक्षण के महत्व और जलाशय में पिंजरा पालन के लिए उपयुक्त प्रजातियों के चयन की आवश्यकता के बारे में बताया। उन्होंने सिफ़री द्वारा मेघालय के उमियाम जलाशय में पिंजरों में कॉमन कार्प के सफल पालन के अनुभव को साझाँ किया। डॉ. बि. के. दास ने मछुआरों को आश्वासन दिया कि संस्थान घेरे में मछली पालन पर प्रशिक्षण और तकनीकी सहायता प्रदान करेगा। उन्होंने स्थानीय युवाओं से भाकृअनुप-सिफरी के तकनीकी सहयोग से जलाशय में हापा में कॉमन कार्प को प्रेरित करने का आग्रह किया। उन्होंने समुदाय को सलाह दी कि वे पिंजरों में या सीधे जलाशय और पिंजरे में तिलापिया का स्टॉक न करें क्योंकि जलाशय के देशी मछली जीवों पर तिलपिया स्टॉकिंग के संभावित नकारात्मक प्रभाव पद सकता है। सुश्री निरुपदा चानू ने मछुआरों के लिए आजीविका के साधन के रूप में मत्स्य पालन को बनाए रखने के लिए जिम्मेदारी के साथ मछली पकड़ने के महत्व के बारे में बताया। इस कार्यक्रम में 25,200 कॉमन कार्प (साइप्रिनस कार्पियो) के अंगुलिकाओं को पिंजरों में संचयित किया गया जिससे उन्हें विपणन योग्य आकार तक विकसित किया जा सके। इस अवसर पर महिलाओं सहित गांव के कुल 30 मछुआरों ने भाग लिया।

सिफरी द्वारा राष्ट्रीय रैन्चिंग कार्यक्रम-2022 का आयोजन

भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, कोलकाता पहली बार 'राष्ट्रीय रैन्चिंग कार्यक्रम-2022' बड़े धूमधाम से मनाने जा रहा है हालांकि इस तरह के कार्यक्रम की शुरूआत सन 2018 से ही कर दिया गया था जिसके तहत लगभग 45 लाख से ज्यादा रोहू, कतला, कलबासु और मृगाल/नैनी मत्स्य प्रजातियों के फिंगरलिंग/अंगुलिका आकर के मत्स्य बीज गंगा नदी के नदीय मार्ग में आने वाले राज्यों (उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखण्ड और पश्चिम बंगाल) के विभिन्न नदी घाटों से छोड़ा जा चुका है लेकिन उक्त कार्यक्रम को इस बार मिशन स्तर पर किया जा रहा है जिसके तहत पंद्रह दिन के भीतर ही बीस लाख से ज्यादा मत्स्य बीज को छोड़ने का लक्ष्य रखा गया है। इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए संस्थान ने गंगा के बहने वाले राजकीय नदीय मार्ग जैसे उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखण्ड और पश्चिम बंगाल में 'नमामी गंगे' परियोजना के तहत 14 मई 2022 से कई विभिन्न कार्यक्रम जैसे मत्स्य बीज को गंगा नदी में छोड़ना, डॉल्फिन व् जल संरक्षण और जन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। रैन्चिंग कार्यक्रम का शुभारंभ दिनांक 14 मई 2022 को बैरकपुर से 'राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन' के महानिदेशक श्री जी. अशोक कुमार के करकमलों से हुआ। महानिदेशक ने कार्यक्रम का शुभारम्भ करने के दौरान बताया की नदियों में विशेषकर गंगा नदी में मत्स्य बीज को छोड़ने से पारिस्थितिकीय और आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण मत्स्य

प्रजातियों का पुनर्रूद्धार होगा जिसके फलस्वरूप अर्थ गंगा के संकल्पना को पूरा करने के साथ-साथ गंगा नदी में मत्स्ययन से प्रत्यक्ष व् अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े लोगों की आजीविका को सुनिश्चित करने के साथ उनके आय में बढ़ोतरी करने में मददगार साबित होगी। सिफ़री के निदेशक और 'नमामि गंगे' परियोजना के प्रधान अन्वेषक डॉ. बसंत कुमार दास ने स्थानीय मछुआरों को गंगा नदी में प्राप्त मछलियों और डॉल्फ़िन के स्वास्थ्य और संरक्षण के पारिस्थितिक विषयों के बारे में जागरूक किया। सिफरी के निदेशक ने बताया की संस्थान और केंद्र सरकार के अंतर्गत आने वाले अन्य संस्थान गंगा नदी की मात्स्यिकी विशेषकर हिल्सा मात्स्यिकी, पुनर्रूद्धार व् संरक्षण के लिए कटीबद्ध है। पहले चरण में, 14 मई 2022 को बैरकपुर के गांधी घाट में 2 लाख से अधिक (रोहू, कतला, कलबासु और मृगाल/नैनी) फिंगरलिंग/अंगुलिका को गंगा नदी में छोड़ा गया। इसके साथ ही गंगा नदी के संरक्षण पर जन जागरूकता अभियान और 'गंगा आरती' का भी भव्य आयोजन किया गया।

राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन प्रायोजित परियोजना के प्रमुख उद्देश्यों में मछली की विविधता का अन्वेषण, सर्वेक्षण, बहुमूल्य मछलियों जैसे रोहू, कतला, कलबासु, मृगाल/नैनी और महासीर के स्टॉक मूल्यांकन के साथ–साथ चयनित मछली प्रजातियों के बीज का उत्पादन और उसके स्टॉक में वृद्धि शामिल है। रोहू, कलबासु और मृगाल/नैनी जैसी मछलियाँ न केवल नदी के स्टॉक में वृद्धि करेंगी बल्कि नदी की स्वच्छता को बनाए रखने में भी मदद करेंगी।

इस कार्यक्रम का आयोजन कोविड -19 के सभी प्रोटोकॉल का पालन करते हुए किया गया। समाज के सभी वर्गों के लोगों के बीच सक्रिय भागीदारी देखी गई और गंगा के तटवर्ती इलाकों के मछुआरों को गंगा के संरक्षण और उसके बहुमूल्य मछलियों के स्टॉक में वृद्धि के संदर्भ में जागरूक किया गया और संवेदनशील बनाया गया।

आजीविका में सुधार के लिए जमुई, बिहार के मछली किसानों के लिए प्रशिक्षण और कौशल विकास कार्यक्रम का आयोजन

बिहार का जमुई जिला अन्तर्स्थलीय खुले पानी के मामले में बहुत संसाधनपूर्ण है, क्योंकि किउल और बरनार नदियां इस जिले का एक बड़ा हिस्सा हैं। प्रचुर मात्रा में जलीय संसाधनों के बावजूद, इस जिले में पर्याप्त मछली उपलब्ध नहीं है। वर्तमान समय की आवश्यकता के आधार पर, मछुआरों की आय दोगुनी करने के लिए संस्थान में कौशल विकास और क्षमता निर्माण कार्यक्रम के रूप में 07-13 मई 2022 तक "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर एक 7-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया है।

इस कार्यक्रम में कुल 25 सक्रिय मछली किसानों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ.बि.के. दास ने मछुआरों की सतत आजीविका सुनिश्चित करने के लिए अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं और कौशल विकास पर जोर दिया। उन्होंने मछुआरों से वैज्ञानिक ज्ञान और अनुप्रयोगों को प्राप्त करके उत्पादकता में वृद्धि के लिए अपने उपलब्ध संसाधनों का प्रयोग करने का आग्रह किया। डॉ. दास ने प्रशिक्षुओं को भारत के अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन में उपलब्ध नए उद्यमशीलता के अवसरों के बारे में भी जानकारी दी।

इस जिले में अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन के विकास के माध्यम से आजीविका में सुधार की पर्याप्त संभावनाएं हैं। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में, संस्थान का उद्देश्य अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के प्रति किसानों के ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण के अंतर को पाटना है। कार्यक्रम में तालाब निर्माण और प्रबंधन, मिट्टी और जल रसायन विज्ञान, प्रेरित प्रजनन, नर्सरी, ब्रूडर के तालाब प्रबंधन, समग्र मछली पालन, सजावटी

मत्स्य पालन, घेरे में मत्स्य पालन, मछली फ़ीड प्रबंधन और फ़ीड प्रोटोकॉल, रोग प्रबंधन, आर्थिक मूल्यांकन, प्रधान मंत्री मत्स्य संपदा योजना, आदि सत्र शामिल थे। आईसीएआर-सीफा कल्याणी मछली फार्म, बालागढ़ प्रगतिशील मछली फार्म, पूर्वी कोलकाता आर्द्रभूमि (ईकेडब्ल्यू), सजावटी मछली बाजार, नैहाटी मछली बीज उत्पादन केंद्र जैसे स्थलों के दौरे शामिल थे। पुन: परिसंचरण एक्वाकल्चर सिस्टम (आरएएस), बाइओ-फ्लोक यूनिट, संस्थान की सजावटी हैचरी इकाइयाँ और फीड मिल से उन्हें परिचित कराया गया और साथ ही विभिन्न आवश्यकता-आधारित पहलुओं जैसे बुनियादी जल गुणवत्ता मापदंडों, स्थानीय रूप से उपलब्ध फ़ीड सामग्री का उपयोग करके मछली फ़ीड तैयार करना, मछली रोगजनकों की पहचान और उनके संबंधित पर व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

फीडबैक सत्र में प्रशिक्षुओं ने अपनी संतुष्टि व्यक्त की। प्रभारी निदेशक डॉ. एस. सामंत ने अपने समापन भाषण में किसानों को इस प्रशिक्षण से प्राप्त ज्ञान को अधिक उत्पादन के लिए लागू करने का आह्वान किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. ए.के. दास, डॉ. अपर्णा रॉय, डॉ. दिबाकर भक्त, डॉ. सजीना ए.एम., श्री सुजीत चौधरी, श्री अविषेक साहा ने बड़ी कुशलता से किया।

अयोध्या के पावन सरयू नदी में मछली संरक्षण हेतु रैन्चिंग कार्यक्रम आयोजित

आईसीएआर-सिफ़री, बैरकपुर, ने 17 मई 2022 को 'राष्ट्रीय रैन्चिंग कार्यक्रम' के तहत उत्तर प्रदेश के अयोध्या शहर के पावन सरयू नदी में रैंचिंग का आयोजन किया। इंडियन मेजर कार्प (कटला, रोहू और मृगल) की 2 लाख उन्नत अंगुलिमीनों को मत्स्य पालन के संरक्षण और बहाली के लिए 'नमामी गंगे' परियोजना के तहत अयोध्या के मुख्तार घाट पर सरयू नदी में छोड़ा गया। इन अंगुलिमीनों का उत्पादन कृत्रिम रूप से गंगा के ब्रूडर्स द्वारा किया गया था।

श्री वेद प्रकाश गुप्ता, अयोध्या के विधान सभा सदस्य, इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि और श्री नीतीश कुमार, आईएएस, अयोध्या के जिला मजिस्ट्रेट विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे ।

श्री वेद प्रकाश गुप्ता ने मुख्य अतिथि के रूप में अपने संबोधन में इस बात पर जोर दिया कि भारतीय प्रमुख कार्प मछली के 2 लाख मछली के बीज जारी करके सरयू नदी की जैव विविधता को बहाल रखने की एक नई शुरुआत की गई है। उन्होंने इस नेक पहल के लिए आईसीएआर-सिफ़री और एनएमसीजी को धन्यवाद दिया।

श्री नीतीश कुमार, अयोध्या के जिला मजिस्ट्रेट ने अपने संबोधन में क्षेत्र के मछुआरों से सरयू नदी से केवल बड़े आकार की मछली पकड़ने का अनुरोध किया। उन्होंने

जोर देकर कहा कि रैन्चिंग कार्यक्रम सरयू में मत्स्य पालन के संरक्षण और बहाली में मदद करेगा और बड़ी संख्या में मछुआरों को आजीविका प्रदान करेगा।

सिफरी के निदेशक और परियोजना के प्रधान अन्वेषक डॉ. बसंत कुमार दास ने स्थानीय मछुआरों को इस विषय में संवेदनशील बनाया और मछली और डॉल्फ़िन के लिए आवश्यक नदी स्वास्थ्य के महत्व पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर उस इलाके के सक्रिय मछुआरों को उनकी आजीविका में सुधार के लिए पच्चीस कास्ट नेट वितरित किए गए। मास्क और सैनिटाइज़र के वितरण के साथ कोविड -19 प्रोटोकॉल का पालन करते हुए कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। इस अवसर पर डॉ संदीप बेहरा, सलाहकार, एनएमसीजी, जिला प्रशासन, अयोध्या पुलिस, एनएमसीजी, आईसीएआर-सिफ़री आदि के अधिकारी उपस्थित थे। नदी के पास रखने वाले सभी वर्गों के व्यक्तियों के बीच सक्रिय भागीदारी देखी गई। 'राष्ट्रीय रैन्चिंग कार्यक्रम' की शुरुआत 14 मई 2022 को एनएमसीजी के महानिदेशक, श्री जी अशोक कुमार, आईएएस, द्वारा बैरकपुर, पश्चिम बंगाल से की गई थी। सिफ़री के वैज्ञानिकों ने इस कार्यक्रम में हिस्सा लिया ।

सिफ़री द्वारा कुलतली के पांच सौ अनुसूचित जाति के मत्स्य पालकों की आजीविका में सुधार

भारत के प्रसिद्ध सुंदरबन इलाके के लोग अपनी आजीविका के लिए मत्स्य पालन पर निर्भरशील हैं और लगातार विशाल चक्रवातों और ज्वार-भाटा से जूझते हुए हमेशा अत्यधिक दबाव में रहते है। इनकी परेशानियों को दूर करने के लिए, सिफ़री अपने एससीएसपी/टीएसपी विकास कार्यक्रमों के तहत विभिन्न तकनीकी इनपुट प्रदान कर, इनकी मदद कर रहा हैं।

सिफ़री के निदेशक डॉ. बि. के. दास की अनुप्रेरणा से कुलतली, दक्षिण 24 परगना में 19 से 21 मई 2022 के दौरान एक जन जागरूकता कार्यक्रम के साथ तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया । पहले दिन तकनीकी टीम ने उत्तरमोकाम्बेरिया और चोरदाकट गांव का दौरा किया और 17 मत्स्य पालकों के साथ चर्चा की और तालाब के पानी की गुणवत्ता और मछली के नमूनों का परीक्षण किया। उन्होंने उनके साथ उनकी सांस्कृतिक रीति-रिवाजों, मत्स्य पालन के तकनीकों और बाधाओं के बारे में विस्तारित बातचीत की और वैज्ञानिक सलाह प्रदान किया। इसके अलावा, उत्तरमोकाम्बेरिया गांव में, 12 सजावटी लाभार्थियों के साथ चर्चा की गई और सजावटी मछली पालन और विपणन के लिए कैनिंग शहर की सजावटी मछली की दुकानों से उनका परिचय करवाया गया। दूसरे दिन (20 मई, 2022) कुलतली मिलन तीर्थ सोसाइटी के सहयोग से कुलटोली, दक्षिण 24 परगना में एक जन जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में दो सीडी ब्लॉक (गोसाबा और बसंती) के 14 ग्राम पंचायतों की 32 बस्तियों के लगभग 500 मत्स्य कृषकों ने भाग लिया। सिफ़री के निदेशक डॉ. बि.के. दास ने जन जागरूकता कार्यक्रम का उद्घाटन किया और अपने भाषण में उन्होंने किसानों को उनकी आय के साथ-साथ आजीविका बढ़ाने के लिए वैज्ञानिक मछली पालन के माध्यम से परित्यक्त जलाशयों, पिछवाड़े के तालाबों और सजावटी मछली पालन को अपनाने की सलाह दी। मत्स्य

कृषकों ने उनसे बात करके मछली पालन और मछली स्वास्थ्य प्रबंधन पर अपने समस्यायों को सुलझाया। डॉ. दास ने उन्हें लाभ की राशि का एक हिस्सा बचाके अगले साल निवेश के रूप में उपयोग करने की भी सलाह दी। उन्होंने कुलतली के महिला सजावटी मछुआरों को, बाजार की मांग, सजावटी मछलियों के प्रजनन, विपणन और एक्वैरियम के सामान को ध्यान में रखकर काम करने की सलाह दी। कुलतली मिलन तीर्थ सोसाइटी के श्री लोकमन मोल्ला ने सुंदरबन क्षेत्र में बड़े पैमाने पर लाभार्थियों को शामिल करते हुए, उनकी आजीविका के उत्थान के लिए सिफ़री द्वारा किए गए कार्यों की सराहना की, जो अपने आप में अद्वितीय है। सिफ़री के एससीएसपी के नोडल अधिकारी, डॉ. पी.के.परिदा ने भी वैज्ञानिक मछली पालन पर एक प्रस्तुति दी और संक्षेप में बताया कि इन बड़े पैमाने पर जागरूकता कार्यक्रमों में शामिल मछुआरों को क्या-क्या लाभ होगा। इस कार्यक्रम के दौरान सजावटी मत्स्य पालन पर एक पुस्तक, और खाद्य भी महिला सजावटी मछुआरों को वितरित की गई। अंतिम दिन यानी 21 मई 2022 को सिफ़री ने पोचापारा और झारखली गांवों के 20 मछली किसानों और सोनाखली गांवों के 12 सजावटी मछुआरों के साथ बातचीत की। इन तीन दिनों के कार्यक्रम के दौरान मत्स्य कृषकों ने सिफ़री द्वारा की गई मदद की सराहना की और क्षमता निर्माण कार्यक्रमों के माध्यम से अपने कौशल को और उन्नत करने की इच्छा भी व्यक्त किया।

माननीय प्रधान मंत्री का सपने "किसानों की आय हो दोगुना" को साकार करने के उद्देश्य से, सिफ़री पिछले नवंबर कार्यरत है । एक साल में इस क्षेत्र के 500 मछुआरों के समूह में 32 लाख के इनपुट के बदले रु. 2.0 करोड़ रुपये लाभ ही सिफ़री का महान उद्देश्य हैं। यह देखा गया है कि 6 महीने के भीतर लगभग 70 लाख (लगभग दोगुनी आय) उत्पन्न करने में सिफ़री सक्षम हुआ हैं।

कार्यक्रम का समन्वय और प्रबंधन कोविड प्रोटोकॉल का पालन करते हुए, सिफ़री के श्री सुजीत चौधरी, डॉ. ए. साहा, और डॉ. श्रेया भट्टाचार्य और मिलन तीर्थ सोसाइटी के कर्मचारियों द्वारा किया गया।

सिफ़री द्वारा आजीविका में सुधार के लिए बिहार के रोहतास के किसानों को कौशल और ज्ञान उन्नयन प्रशिक्षण के माध्यम से सशक्त बनाया गया

बिहार का दक्षिण-पश्चिमी जिला रोहतास (क्षेत्र: 3,838 किमी 2) अन्तर्स्थलीय खुले जल मत्स्य संसाधनों से बहुत समृद्ध है, और यह जगह नदियों से भरा हुआ है, जैसे कर्मनासा, सुआरा पश्चिम और पूर्व, दुर्गावती, गोपथ, धोबा, औसाने, गायघाट, और सोन। सोन नदी पर बना इंद्रपुरी बैराज भी मत्स्य संसाधन के रूप में उल्लेखनीय है। रोहतास में कुल आर्द्रभूमि कवरेज 18,641 हेक्टेयर है, जिसमें से 223 छोटे (<2.25 हेक्टेयर) मध्यम अप्रयुक्त क्षमता वाले जलीय संसाधन हैं। इन जलीय संसाधनों के बावजूद, इस जिले में मछली की आपूर्ति है। वर्तमान समय की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए, 17-23 मई 2022 के दौरान भाकृअनुप-सिफ़री, बैरकपुर में "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर एक 7-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया था, जिसका लक्ष्य किसानों के ज्ञान, कौशल और क्षमता को बढ़ाना और आय दुगनी करना था।

इस कार्यक्रम में छब्बीस सक्रिय मछली किसानों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के. दास ने प्रशिक्षु किसानों को उनकी स्थायी आजीविका सुनिश्चित करने के लिए अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं पर उनके ज्ञान और कौशल उन्नयन के लिए आमंत्रित किया। सभी मछुआरों को वैज्ञानिक ज्ञान और इसके अनुप्रयोगों को प्राप्त करके उत्पादकता में वृद्धि के माध्यम से अपने उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करना चाहिए- डॉ. दास ने दोहराया। उन्होंने प्रशिक्षुओं को भारत के अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन में उपलब्ध नए उद्यमशीलता के अवसरों के बारे में भी विस्तार से बताया।

इस जिले में अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन के विकास के माध्यम से आजीविका में सुधार हो सकता है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के प्रति किसानों के ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण के अंतर को पाटना है। कार्यक्रम में तालाब निर्माण और प्रबंधन, मिट्टी और जल रसायन विज्ञान, प्रेरित प्रजनन, नर्सरी, पालन और ब्रूडर का तालाब प्रबंधन, समग्र मछली पालन, सजावटी मत्स्य पालन, कॉम्पोसीट कल्चर , मछली फ़ीड प्रबंधन और रोग प्रबंधन, आर्थिक मूल्यांकन, प्रधान मंत्री मत्स्य संपदा योजना, आदि पर कक्षा शामिल थे। इसके अलावा, सिफ़री प्रौद्योगिकियों पर वृत्तचित्र प्रशिक्षुओं को प्रदर्शित किए गए।

आईसीएआर-सीफा कल्याणी मछली फार्म, बालागढ़ प्रगतिशील मछली फार्म, पूर्वी कोलकाता आर्द्रभूमि, सजावटी मछली बाजार, नैहाटी मछली बीज उत्पादन केंद्र, आदि क्षेत्र के दौरे शामिल थे। पुन: परिसंचरण एक्वाकल्चर सिस्टम (आरएएस), जैव-फ्लोक इकाइयां, संस्थान की सजावटी हैचरी इकाइयाँ और फीड मिल से उन्हें परिचित कराया गया और साथ ही विभिन्न आवश्यकता-आधारित पहलुओं जैसे बुनियादी जल गुणवत्ता मापदंडों, स्थानीय रूप से उपलब्ध फ़ीड सामग्री का उपयोग करके मछली फ़ीड तैयार करना, मछली रोगजनकों की पहचान और उनके संबंधित उपचारात्मक उपाय पर व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया। फीडबैक सत्र में प्रशिक्षुओं ने अपनी संतुष्टि व्यक्त किया। अपने समापन भाषण में, निदेशक महोदय ने किसानों से इस प्रशिक्षण से प्राप्त ज्ञान को अधिक उत्पादनों को समेकित करने के लिए लागू करने का आग्रह किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. ए.के. दास, डॉ. अरुण पंडित, सुश्री पी.जे. मांझी और श्री विकास कुमार ने बड़ी कुशलता से किया।

सिफरी द्वारा राष्ट्रीय रैन्चिंग कार्यक्रम'-2022 के तहत पश्चिम बंगाल के दक्षिणेश्वर में रैंचिंग

गंगा नदी में भारतीय मेजर कार्प प्रजातियों की जनसंख्या दिन-प्रति-दिन घटती जा रही है। भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने नमामि गंगे कार्यक्रम के तहत इन प्रजातियों के संरक्षण और पुनरुद्धार करने के लिए विभिन्न राज्यों में गंगा नदी में राष्ट्रीय रैन्चिंग

कार्यक्रम'-2022 का शुभारंभ किया है। इस क्रम में संस्थान द्वारा दिनांक 31 मई 2022 को पश्चिम बंगाल के दक्षिणेश्वर में गंगा नदी में 2 लाख वाइल्ड इंडियन मेजर कार्प प्रजातियों (लेबियो रोहिता, लेबियो कतला और सिरहिनस मृगला) के जर्मप्लाज्म को छोड़ा गया। इस अवसर पर परियोजना के वरिष्ठ सलाहकार, श्री बृजेश सिक्का ने गंगा नदी के संसाधन क्षेत्रों और मछली विविधता के महत्व पर प्रकाश डाला। डॉ. संदीप बेहरा, सलाहकार, नमामि गंगे परियोजना ने मछुआरों को मछली पकड़ने के गैर-पारंपरिक तरीके जैसे विषाक्त तत्वों और महीन जालछिद्र वाले जालों के निषेध के बारे में जागरूक किया। राष्ट्रीय रैन्चिंग कार्यक्रम'-2022 के तहत, सिफरी ने वर्ष 2022 में गंगा नदी में 8 लाख से अधिक इंडियन मेजर कार्प प्रजातियों के अंगुलिकाओं और जर्मप्लाज्म को छोड़ा है, जिससे इस नदी के मछुआरों के आजीविका उन्नयन में मदद मिलेगी। इस कार्यक्रम में स्थानीय लोगों और मछुआरों की उपस्थिति बड़ी संख्या में देखी गई ।

छत्तीसगढ़ के आदिवासी मछुआरों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम

देश के मध्य भाग में स्थित, छत्तीसगढ़ राज्य एक आदिवासी बहुल राज्य है जिसकी 30 प्रतिशत जनसंख्या आदिवासी है। भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी) ने मत्स्य विभाग, छत्तीसगढ़ के साथ मिलकर छत्तीसगढ़ की मूल आदिवासी लोगों की सामाजिक-आर्थिक उत्थान के लिए पहल किया है। इस मिशन मोड आजीविका सुधार कार्यक्रम के तहत दिनांक 24 से 27 मई 2022 के दौरान भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान पालन के मुख्यालय, बैरकपुर में "पेन में मछली पालन के माध्यम से छोटे जलाशयों में उत्पादन वृद्धि" पर एक क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ से कुल 29 प्रतिभागियों ने भाग लिया जिनमें 9 मत्स्य निरीक्षक और चयनित जलाशयों के पीएफएससी सदस्य थे।

छत्तीसगढ़ के 10 जलाशयों जैसे तोरेंगा, बहेरा खार, सुतिया पथ, मतियामोती बांध, कोसेर्टेडा, राबो, घुंघुट्टा, गेज, केशवनाला और

परोलकट में पेन में मछली पालन द्वारा मछली उत्पादन वृद्धि शुरू की गई है। सिफरी ने इन जलाशयों के पीएफएससी सदस्यों को बीस एचडीपीई पेन, इंजन वाली दस नाव, बीस कोराकल और बीस टन सीआईएफआरआई केज ग्रो फीड देकर पेन लगाया है।

इस 4 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान प्रशिक्षकों ने संस्थान के निदेशक, डॉ. बि के दास, और वैज्ञानिकों के साथ छोटे जलाशयों में वैज्ञानिक तौर पर मछली पालन और उत्पादन वृद्धि पर चर्चा की। डॉ. दास ने उन्हें जलाशयों में मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए पेन पालन के माध्यम से मछली के बीज उगाने और जलीय खरपतवार वाले बंद जलाशयों में ग्रास कार्प पालन अपनाने की सलाह दी। प्रशिक्षुओं को पेन पालन के विभिन्न पहलुओं जैसे स्थल चयन, जल गुणवत्ता प्रबंधन, पेन में मत्स्य आहार प्रबंधन, पालित प्रजातियों में रोग प्रबंधन और छोटे जलाशयों का समग्र प्रबंधन के बारे में प्रशिक्षण दिया गया। इसके अलावा उन्हे 26 मई 2022 को पश्चिम बंगाल के खोलसी बील में पेन पालन पर एक प्रदर्शन किया गया।

सिफरी द्वारा पश्चिम बंगाल के नवद्वीप और फरक्का में रैंचिंग कार्य

राष्ट्रीय रैंचिंग कार्यक्रम के तहत, भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, कोलकाता ने पश्चिम बंगाल में 2 दिवसीय रैंचिंग कार्यक्रम के दौरान दिनांक 25 मई 2022 को फरक्का तथा 26 मई 2022 को नवद्वीप में गंगा नदी में इंडियन मेजर कार्प प्रजातियों के मत्स्य बीजों को छोड़ा है। प्रथम दिन, 25 मई

2022 को फरक्का में इंडियन मेजर कार्प प्रजातियों (लेबियो रोहिता, लेबियो कतला और सिरहिनस मृगला) के 2 लाख वाइल्ड फिश जर्मप्लाज्म को छोड़ा गया। इस कार्यक्रम में सहायक मत्स्य निदेशक, श्री अमलेंदु बर्मन ने गंगा नदी के संसाधन क्षेत्रों और मछली विविधता के महत्व पर प्रकाश डाला। ब्लॉक विकास अधिकारी, श्री जुनैद अहमद और पुलिस उप-आयुक्त, श्री नरेश तलवार ने मछुआरों को मछली पकड़ने के गैर-पारंपरिक तरीकों जैसे विषाक्त पदार्थों और छोटे छिद्रों वाले जाल के प्रयोग के निषेध के बारे में जागरूक किया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय गंगा स्वच्छ अभियान के परियोजना मुख्य संचालक तथा सिफरी के निदेशक, डॉ बि के दास ने बताया कि राष्ट्रीय रैंचिंग कार्यक्रम-2022 के तहत सिफरी ने वर्ष 2022 में गंगा नदी में इंडियन मेजर कार्प प्रजातियों के 6 लाख से अधिक जर्मप्लाज्म को छोड़ा है, जिससे गंगा नदी के मात्स्यिकी पुनरुद्धार तथा मछुआरों के आजीविका उन्नयन में मदद मिलेगी। फरक्का में आयोजित इस रैंचिंग कार्यक्रम में सिफरी के एनएमसीजी परियाजना टीम तथा फरक्का के स्थानीय लोगों के अलावा मछुआरे, फरक्का बैराज के अधिकारीगण और मीडियाकर्मी 100 से अधिक लोग उपस्थित थे।

इसी क्रम में दिनांक 26 मई 2022 को नवद्वीप के मायापुर में गंगा नदी में दो लाख भारतीय मेजर कार्प के बीजों की रैंचिंग की गई। इन बीजों को कृत्रिम रूप से गंगा के ब्रूड मछलियों के पालन से विकसित किया गया है। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक, डॉ बि के दास ने स्थानीय मछुआरों को नदी मे मत्स्य पालन के प्रति जागरूक करते हुए नदी पुनरुद्धार के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि मछुआरों के

आजीविका का का मुख्य आधार "अविरल धारा' एवं निर्मल धारा वाले सिद्धांत पर नर्भर है। इस कार्यक्रम का आयोजन सहायक मत्स्य निदेशक, सचिव, पीएफसीएस और स्थानीय सामाजिक कार्यकर्ताओं और मछुआरों के सानिध्य में किया गया।

मुख्य शोध उपलब्धियां

- मणिपुर की राज्य मछली पेंगबा *ओस्टियोब्रामा बेलंगेरी* के पुनरुद्धार के लिए लोकतक झील (रामसर साइट) में पेंगबा मछली की एक लाख अंगुलिकाओं को छोड़ा गया था।
- ओडिशा के सुनेई बांध की पांच सामान्य रूप से उपलब्ध मछली प्रजातियों (*लेबीओ कातला, एल. कलबासु, सिरहिनस मृगला, सी. रेबा, स्पेरेटा* सिंघाला) के मांसपेशियों के नमूनों में भारी धातुओं (कॉपर, जिंक, मैंगनीज, क्रोमियम और कैडमियम) और कीटनाशकों की उपस्थिति का विश्लेषण किया गया। इसमें यह पता चला कि इन मछलियों में उपस्थित भारी धातुओं और कीटनाशकों का स्तर निर्धारित सीमा के भीतर थे जो मानव उपभोग के लिए सुरक्षित हैं। निमसहर, राजमहल और मालदा के पास फरक्का बैराज के ऊपरी क्षेत्र में किशोर हिल्सा मछली (आकार 3 से 9 ग्राम) पाई गई जो संस्थान द्वारा किए गए निरंतर रैंचिंग का परिणाम था।
- गंगा नदी में दिनांक 14 मई, 2022 को गांधी घाट बैरकपुर में रोहू, कतला और मृगल की दो लाख कृत्रिम रूप से पैदा की गई वाइल्ड मछलियों के जर्मप्लाज्म को मछली संरक्षण और पुनरुद्धार के लिए नदी में छोड़ा गया था।
- गंगा नदी में दिनांक 17 मई, 2022 को अयोध्या में सरयू नदी में रोहू, कतला और मृगल की दो लाख कृत्रिम रूप से पैदा की गई वाइल्ड मछलियों के जर्मप्लाज्म को मछली संरक्षण और पुनरुद्धार के लिए नदी में छोड़ा गया था।
- अप्रैल 2022 में उत्तर प्रदेश के प्रयागराज खंड में, गंगा नदी में 7.50 टन 0.18 टन बिहार के भागलपुर खंड से, 0.112 टन डोबराचती मछली लैंडिंग केंद्र, उत्तराखंड में फिश लैंडिंग हुई है।
- मध्यम कार्प, *बारबोडेस्कर्नेटिकस* की जनसंख्या संरचना और आनुवंशिक विविधता अर्थात् कर्नाटक और तमिलनाडु, कावेरी नदी, केरल नदी से स्टॉक चलाकुडी और फार्म का स्टॉक के माइटोकॉन्ड्रियल डीएनए साइटोक्रोम बी जीन के उपयोग की मदद से स्टॉक किया गया।
- कृष्णा नदी के लिए एक ई-एटलस विकसित किया गया था, जिसमें पानी और तलछट की गुणवत्ता की जानकारी प्रदर्शित की गई है । इसके लिए जल निकाय के साथ महत्वपूर्ण सूचनाओं जैसे, डिजीटल एलिवेशन, राज्य सीमा, नदी बेसिन, कृष्णा बेसिन, कृष्णा नदी और सैंपलिंग स्टेशन का उपयोग किया गया था। मार्च 2022 के दौरान गंगा नदी के प्रयागराज खंड से अनुमानित मछलियों की लैंडिंग 12.102 मीट्रिक टन थी। मार्च 2021 की तुलना में कुल मछली पकड़ में लगभग 73.00 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है।

बैठकें

- संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने दिनांक 26 अप्रैल 2022 को "मानव और पशु उपभोग और खाद के लिए रेशमकीट प्यूपा उत्पादों के उपयोग और विविधीकरण" पर केंद्रीय तसर अनुसंधान

और प्रशिक्षण संस्थान (सीटीआरटीआई), रांची के साथ सहयोगी परियोजना के लिए एक बैठक में भाग लिया।

- संस्थान ने 27 अप्रैल, 2022 को पश्चिम बंगाल राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन-आईएफसी परियोजना के संबंध में चर्चा में एक बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने कल्याणी, पश्चिम बंगाल में भारतीय विज्ञान कांग्रेस संस्था, कोलकाता चैप्टर में दिनांक 28-29 अप्रैल 2022 तक "देश के लिए भावी पीढ़ी के सतत स्वास्थ्य विज्ञान" पर 2 दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया। इस सत्र में निदेशक ने दिनांक 28 अप्रैल 2022 को "मानव पोषण में मछली" पर एक प्रस्तुति दिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 07 मई, 2022 को कोलकाता में भारतीय विज्ञान कांग्रेस संस्था की कार्यकारी समिति बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने दिनांक 5-7 मई, 2022 के दौरान एशियन फिशरीज नागापट्टिनम, चेन्नई तमिलनाडु सोसाइटी ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित डॉ. जे. जयललिता मात्स्यिकी विश्वविद्यालय में आयोजित में 12वें भारतीय मात्स्यिकी और एक्वाकल्चर फोरम (12वें आईएफएएफ) में भाग लिया। उक्त फोरम का विषय तहत, "पोषण सुरक्षा और आर्थिक स्थिरता के लिए मछली पालन"।
- संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिक ने दिनांक 7 मई, 2022 को प्रस्तावित भारत-जर्मन वित्तीय सहयोग कार्यक्रम के तहत असम, मणिपुर, त्रिपुरा, ओडिशा, छत्तीसगढ़ और आंध्र प्रदेश में अन्तर्स्थलीय मत्स्य विकास पर टीम लीडर, कोफाद के साथ बैठक में भाग लिया।
- संस्थान ने दिनांक 19-20 मई, 2022 को गोबिंद वल्लभ पंत कृषि और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर में आयोजित मत्स्य पालन और जलीय कृषि में समसामयिक मुद्दों पर राष्ट्रीय संगोष्ठी और जीवन विज्ञान के 10वें वार्षिक सत्र में भाग लिया।

अन्य कार्यक्रम

- 27 अप्रैल 2022 को भारतीय पर्यावरण अध्ययन संस्थान के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में 10 व्यक्तियों ने भाग लिया।
- संस्थान ने 27 अप्रैल, 2022 को मोरिधल कॉलेज, धेमाजी जिला, असम में आर्द्रभूमि मछुआरों के लाभ के लिए एक फ़ीड वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया। इस अवसर पर श्री प्रसाद बरुआ, माननीय संसद सदस्य, लखीमपुर, और डॉ. रानोज पेगू, माननीय शिक्षा मंत्री और डब्ल्यूपीटीबीसी विभाग, भारत सरकार उपस्थित हुए। जिले के 50 आर्द्रभूमि मछुआरों के बीच कुल 5.25 टन सिफरी केजग्रो फ़ीड वितरित किया गया।
- दिनांक 7-13 मई 2022 के दौरान भागलपुर जिले, बिहार के मछली किसानों के लिए "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर 7 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें जिले के 30 मछुआरों ने भाग लिया।
- मत्स्य विभाग, छत्तीसगढ़ के सहयोग से टौरेंगा, गरियाबाद, छत्तीसगढ़ में दिनांक 13 मई, 2022 को पेन में मछली पालन पर प्रदर्शन सह जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें 56 आदिवासी लाभार्थी उपस्थित थे।
- रोहतास जिले, बिहार के मछली किसानों के लिए "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर 7 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम दिनांक 17-23 मई, 2022 आयोजित किया गया जिसमें 20 मछुआरों ने भाग लिया।
- संस्थान ने मई 2022 के दौरान गांधी घाट, बैरकपुर और अयोध्या, उत्तर प्रदेश में गंगा मत्स्य पालन, हिल्सा और डॉल्फिन के संरक्षण के लिए 3 जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए हैं। जागरूकता कार्यक्रम के माध्यम से मछुआरों सहित कुल 241 स्थानीय लोगों को जागरूक किया गया।
- पश्चिम बंगाल के पंचपोटा और मेदिया बील में "किसान भागीदारी" और "आजादी का अमृत महोत्सव" के अलावा जलवायु लचीला प्रणालियों में "जलवायु लचीला अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन" कार्यक्रम पर 2 दिवसीय जागरूकता अभियान का आयोजन किया गया। इस अभियान में जलवायु अनुकूल रणनीतियों और अनुकूलन प्रौद्योगिकियों पर जोर दिया, जिसमें 70 मछुआरों ने भाग लिया।
- संस्थान ने दिनांक 19-21 मई 2022 तक कुलटोली, सुंदरबन, पश्चिम बंगाल में " अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन और सजावटी मत्स्य पालन विकास" पर 3 दिवसीय प्रशिक्षण सह जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम में 500 मछुआरों ने भाग लिया।
- जलवायु अनुकूलन रणनीति का प्रदर्शन करने और भागीदारी मोड में मछुआरों के आजीविका उन्नयन के लिए पश्चिम बंगाल के 3 जिलों, मुर्शिदाबाद, नदिया और उत्तर 24 परगना में 11 जलवायु लचीला पेन क्षेत्र (प्रत्येक 0.1 हेक्टेयर का क्षेत्र) को स्थापित किया गया। बेहतर उत्पादन प्राप्त करने के साथ-साथ आर्द्रभूमि से घटती मछली प्रजातियों के पुनरुद्धार इन पेन में कुल 276 किग्रा जलवायु अनुकूल प्रजातियों जैसे लेबीओ बाटा और पुंटियस सराना को स्टॉक किया गया था।

सिफरी समाचार पत्रों एवं संचार माध्यम में

METRO THE TELEGRAPH TUESDAY 24 MAY 2022

ICAR CIFRI conducts ranching programme at Manipur

CIFRI published Shri N.Biren Singh, Hon'ble Chief Minister of Manipur, planted one lakh Pengba (state fish of Manipur) fish fingerlings in Loktak Lake. In his remarks at the function, he praised ICAR CIFRI, Barrackpore's collaborative efforts with local fishermen and the department to protect and revitalise the state's indigenous fish varieties. The programme also included the distribution of inputs to fish farmer associations, such as

THE TIMES OF INDIA

ICAR-CIFRI ranching in Manipur

CIFRI released one lakh Pengba (state fish of Manipur) fish fingerlings in Loktak lake by N Biren Singh, chief minister of Manipur. Singh appreciated the concerted efforts of ICAR-CIFRI, Barrackpore taken up in collaboration with local fishermen and the department in trying to protect and revive the indigenous fish varieties of the state. Of 54 indigenous fish varieties in the state, only 35 varieties are in existence now, he said, expressing concern over the environmental hazard caused by human negligence. Dr BK Das, director, ICAR-CIFRI, said the population of Pengba is

gradually declining in Loktak Lake so ICAR-CIFRI is trying to reestablish its population in the lake. He assured that this fish will establish its population within two to three years in the lake, and increase the livelihood of the local fish farmers. The programme also included distribution of inputs including cage net and fish feeds to fish farmers' associations. On this occasion, three pamphlets and a poster on fishes of Loktak Lake were released by the CM.

সুন্দরবনের মৎস্যচাষীদের পাশে দাঁড়াল কেন্দ্রীয় অন্তঃস্থলীয় মৎস্য গবেষণা কেন্দ্র

সুভাষ চন্দ্র দাশ : ক্যানিং

২৯ টি ব্লক নিয়ে গঠিত সুন্দরবন। প্রায় ৫০ হাজারেরও অধিক মানুষের বসবাস। মূলত চাষবাসের উপর নির্ভরশীল এলাকার মানুষ। বিগত কয়েক বছর যে ভাবে প্রাকৃতিক দুর্যোগ বেড়ে চলেছে এবং নদীবাঁধ ভেঙে এলাকা লবণাক্ত জলে প্লাবিত হচ্ছে তাতে করে পিছিয়ে পড়া সুন্দরবন এলাকায় চাষের ব্যাপক ক্ষতি হয়েছে। ফলে বর্তমানে ধান সহ অন্যান্য ফসলের চাষের পাশাপাশি মাছ চাষ সুন্দরবনবাসীদের জীবন জীবিকার অন্যতম অবলম্বন। আর আধুনিক পদ্ধতিগতভাবে মাছ চাষ না করার জন্য সুন্দরবনের বিস্তীর্ণ এলাকার মাছ চাষের উপর নির্ভরশীল মানুষদের কে বিপদের সম্মুখীনহতে হচ্ছে।যাতে করে সুন্দরবনবাসীরা কোন প্রকার বিপদের সম্মুখীন হতে না হয় তার জন্য তাদের পাশে সহযোগীতার হাত বাড়িয়ে দিয়ে এগিয়ে এলো কেন্দ্রীয় অন্তঃস্থলীয় মৎস্য গবেষণা কেন্দ্র। আধুনিক প্রযুক্তির মাধ্যমে মাছ চাষ করার জন্য বিগত এক বছর পূর্বে ৫০০ পরিবার কে মাছের চারা চুন ও মাছের খাদ্য দিয়ে সাহায্য করেছিলেন। সেই সমস্ত চাষীদের নিয়ে গত তিনদিন ধরে কুলতলী মিলনতীর্থ সোসাইটির সহযোগীতায় এক সচেতনতা শিবির আয়োজন করেছিল কেন্দ্রীয় অন্তঃস্থলীয় মৎস্য গবেষণা কেন্দ্র।

অনুষ্ঠানের সূচনা করেন অন্তঃস্থলীয় মৎস্য গবেষণা কেন্দ্রের ডিরেক্টর ডঃ বসন্ত কুমার দাস। উপস্থিত ছিলেন কুলতলি মিলনতীর্থ সোসাইটির কর্ণধার লোকমান মোল্লা,আরিফ সরদার, অচিন্ত্য দিন্দা সহ অন্যান্য বিশিষ্টরা। ডঃ দাস বলেন, সুন্দরবনের মৎস্য চাষীদের স্বনির্ভর করার লক্ষ্যে প্রযুক্তি ও মাছের চারা, ফ্লোটিং ফিশ ফিড, চুন দেওয়া হয়েছিল গত এক বছর আগে। বর্তমানে আমাদের বিভাগীয় বিজ্ঞানীগণ সার্ভে করে রিপোর্ট তৈরি করেছেন। আমরা আপনাদের পাশে আছি, আগামী দিনে সহযোগিতা করার জন্য হাত বাড়িয়ে দেবো। কারণ সুন্দরবনের অর্থনৈতিক মান উন্নয়নে মাছ চাষ একটি গুরুত্বপূর্ণ অর্থকারী ফসল হতে। যা আগামী দিনে সুন্দরবনবাসীদের কে জীবনজীবিকা নির্ধারণে অন্যতম দিশা হিসাবে দেখা দেবে।' বিশিষ্ট সমাজসেবী তথা কুলতলী মিলনতীর্থ সোসাইটির কর্ণধার লোকমান মোল্লা বলেন, প্রতিবছর বন্যা, ঘূর্ণিঝড় এবং অতিবর্ষণে সুন্দরবন এলাকার মাছ চাষীরা ব্যাপকভাবে ক্ষতিগ্রস্ত হচ্ছে। ক্ষতিগ্রস্থ হচ্ছে অন্যান্য চাষও। বারে বারে প্রাকৃতিক দুর্যোগে সম্মুখীন হয়ে অর্থনৈতিক দিক থেকে পিছিয়ে পড়ছে। এহেন পরিস্থিতিতে, কেন্দ্রীয় অন্তঃস্থলীয় ও মৎস্য গবেষণা সংস্থার অধিকর্তা যে উদ্যোগ গ্রহণ করেছেন তা বাস্তবায়িত করতে পারলে আগামী দিনে সুন্দরবনের আর্থসামাজিক মান উন্নয়নে উল্লেখযোগ্য ভূমিকা পালন হতে পারে তিনি আরো বলেন, মানুষের পিঠ যখন দেয়ালে ঠেকে যায় তখন সামনে এগিয়ে যাওয়া ছাড়া কোন বিকল্প পথ থাকে না। সুন্দরবনবাসীদের ক্ষেত্রে অনেকটা সেরকমই পরিস্থিতি। সুতরাং, ধান চাষ যখন ক্ষতির সম্মুখীন হচ্ছে সে ক্ষেত্রে মাছ চাষই একমাত্র অন্যতম অবলম্বন।'

सिफरी द्वारा सरयू नदी में दो लाख मछलियों को छोड़ा गया

अयोध्या। भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (कळअफ उकमझक), बैरकपुर, कोलकाता पहली बार ह्यराष्ट्रीय रैन्चिंग कार्यक्रम-2022ह्व बड़े धूमधाम से मनाने जा रहा हैह्व। हालांकि इस तरह के कार्यक्रम की शुरूआत सन 2018 से ही कर दिया गया था जिसके तहत लगभग 45 लाख से ज्यादा रोहू, कतला, कलबासु और मृगाल/नैनी मत्स्य प्रजातियों के फिंगरलिंग अंगुलिका आकर के मत्स्य बीज गंगा नदी के नदीय मार्ग में आने वाले राज्यों उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखण्ड और पश्चिम बंगाल के विभिन्न नदी घाटों से छोड़ा जा चुका है । लेकिन उक्त कार्यक्रम को इस बार मिशन स्तर पर किया जा रहा है, जिसके तहत पंद्रह दिन के भीतर ही बीस लाख से ज्यादा मत्स्य बीज को छोड़ने का लक्ष्य रखा गया है। इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए

सरयू नदी में मछली छोड़ते विधायक वेद प्रकाश गुप्ता व जिलाधिकारी नवदीप रिणवा व अन्य

संस्थान ने गंगा के बहने वाले राजकीय नदीय मार्ग जैसे उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखण्ड और पश्चिम बंगाल में ह्यनमामी गंगेह्व परियोजना के तहत 14 मई 2022 से कई विभिन्न कार्यक्रम जैसे मत्स्य बीज को गंगा नदी में छोड़ना, डॉल्फिन ठ जल संरक्षण और जन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है । रैन्चिंग कार्यक्रम का शुभारंभ दिनांक 14 मई 2022 को बैरकपुर से ह्यराष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशनह्व के महानिदेशक श्री जी. अशोक कुमार के करकमलों से हुआ और आज यह कार्यक्रम सरयू नदी के तट पर स्थित अयोध्या में किया गया । इसके अंतर्गत दो लाख भारतीय प्रमुख कार्प मछलियों के अंगुलिकाओ को सरयू नदी में छोड़ा गया जिससे इन मछलियों का नदी में पुनर्स्थापन होगा तथा नदी की मत्स्य और मात्स्यिकी में गुणात्मक परिवर्तन आएगा। इन अंगुलिकाओ का प्रजनन गंगा नदी से पकड़ी गई ब्रूडर से किया गया हैं ' इस कारण नदी में छोड़ने के बाद मछलियों का आनुवंशिक शुद्धता बना रहेगा'

इस कार्यक्रम में संस्थान के निदेशक तथा परियोजना के मुख्य अन्वेषक डॉ बी के दास

मछली उत्पादन वृद्धि कार्यक्रम शुरू

मटिया मोती नाला में पेन विधि से मत्स्य पालन की शुरूआत

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

जोंधरा. केंद्रीय अंतर्स्थलयीय मास्त्यिकी अनुसंधान बैरकपुर सिफरी ने छत्तीसगढ विभाग के साथ साझेदारी में आदिवासी आबादी की सामाजिक आथिक स्थित के उत्थान के लिए एक नई पहल की है। जलाशय छत्तीसगढ राज्य के प्रमुख अंतर्स्थलयीय मास्त्यिकी अनुसंधान बैरकपुर सिफरी के निर्देशक डॉ. बिके दास के नेतृत्व में चयनित छोटे जलाशयों में प्राथमिक मछुवाआर सहकारी समितियों की मदद से मछली उत्पादन वृद्धि कार्यक्रम शुरू गया है।

संस्थान ने छत्तीसगढ के चयनित छोटे जलाशयों में (तोरेंगा बेहेराखार, सुतियागाठ, मटियामोती, कोसेरटेडा, राबों, घुंघट्टा गेज केशननाला) बीस पेन दस इंजन वाले नाव बीस कोराकल और बीस टन सिफरी केज ग्रो फीड प्रदान किया है।

इस कार्यक्रम में कुल 31 आदिवासी लाभार्थी और हितग्राही उपस्थित थे। केंद्रीय अंतर्स्थलयीय मास्त्यिकी अनुसंधान बैरकपुर सिफरी के द्वारा मत्स्य विभाग के माध्यम से समिति को पेन विधि के उचित क्रियान्वयन के लिए 2 एफआरपी कोराकल, एक इंजिम साहित नाव, 2 टन मत्स्य आहार और 113 मीटर के 2 एचपी ई पेन सामग्री प्रदान की गई।

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, गणेश चंद्र, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान,(आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन), बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91; फैक्स: +91-33-25920388; ई- मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in

ISSN 0970-616X

सिफरी मसिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुन: उत्पन्न नहीं की जा सकती है